Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

बोधगम्यता

(द्विभाषिक)

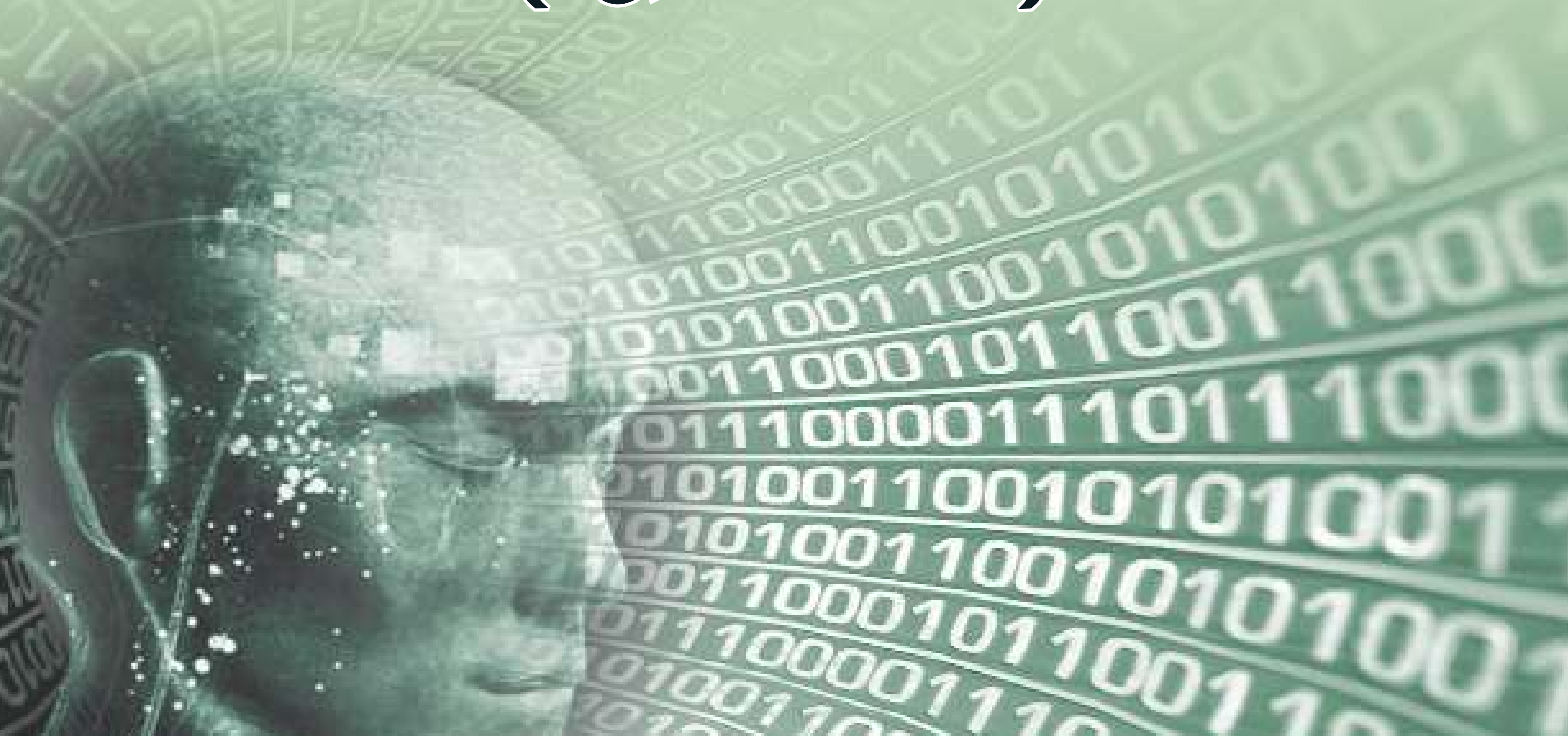

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: MPC05

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPCS)

सीसैट

बोधगम्यता

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Web: www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1. परिचय 5 – 14

2. राजनीतिक 15 – 23

3. सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक 24 – 42

4. पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण 43 – 57

5. विज्ञान और प्रौद्योगिकी 58 – 65

6. दर्शन 66 – 74

7. विविध 75 – 86

8. विगत वर्षों के प्रश्न 87 – 115

परिचय

बोधगम्यता शब्द का तात्पर्य किसी परीक्षार्थी के मानसिक रूप से किसी विषय को समझने, अवधारित करने की योग्यता, उसका संपूर्ण अर्थों में विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर उस पर आधारित प्रश्नों का सटीक समाधान निकालने से है। बोधगम्यता के माधयम से परीक्षार्थी की विश्लेषणात्मक तथा तार्किक क्षमता के साथ शब्दों के सटीक अर्थ को समझने के बाद निर्णय लेने की प्रवृत्ति का परीक्षण किया जाता है।

बोधगम्यता में सामान्यत: एक अनुच्छेद मूलत: किसी उद्धत पाठ का एक अंश, किसी घटना विशेष का उल्लेख या फिर अन्य किसी भाषा के पाठ का अनुवाद होता है। जिसके बाद उस पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाते हैं। बहुविकल्पीय प्रश्नों को पूछने का उद्देश्य परीक्षार्थी की बोधगम्यता का अवलोकन करते हुए निर्णयन शक्ति का परीक्षण करना होता है।

वर्तमान समय में लोक सेवा आयोग की विभिन्न परीक्षा प्रणालियों में बोधगम्यता को विशेष स्थान दिया गया है, जिसके द्वारा किसी भी कुशल प्रशासनिक अधिकारी की निम्नलिखित दक्षताओं को जाँचा जा सके-

1. पठित परिच्छेद की विषय वस्तु की समझ
2. परिस्थितिजन्य बोध क्षमता
3. विचारों का क्रियान्वयन
4. कार्य की प्राथमिकता का मापदंड
5. भविष्य का दृष्टिकोण
6. न्याय-निर्णयन क्षमता

परिच्छेद पढ़ने के तरीके

पढ़ना किसी भी परीक्षा प्रबंधन में विशेष बढ़त दिलाता है, किंतु परिच्छेद को पढ़ना अन्य विषय को पढ़ने की तुलना में विशेष आयामों के अनुपालन की विशेष मांग करता है। परिच्छेद को पढ़ते समय परीक्षार्थियों को निम्नलिखित आयामों का अनुपालन करना चाहिये।

परिच्छेद को पढ़ने से पहले: किसी भी परिच्छेद को पढ़ने से पहले परीक्षार्थी को उस पर आधारित प्रश्नों को सावधानीपूर्वक पढ़ लेना प्रश्नों के उत्तर देने में विशेष सहायता प्रदान करता है, क्योंकि प्रश्न को पहले पढ़ने से कभी-कभी बिना समय खर्च किये प्रश्न का उत्तर आसानी से ज्ञात किया जा सकता है। परीक्षार्थियों को उपयुक्त तकनीकियों का अभ्यास करना चाहिये, जिसका प्रयोग परीक्षार्थी परिच्छेद पढ़ने के दौरान करना चाहते हैं।

परिच्छेद पढ़ने के दौरान: सबसे मुख्य प्रक्रिया परिच्छेद के पढ़ने के दौरान अनुपालन की है, क्योंकि इस समय परीक्षार्थी की एकाग्रता उत्तर चुनने में सहायक सिद्ध होती है। अत: परीक्षार्थियों को निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

1. परिच्छेद को समझते हुए एकाग्रचित होकर शीघ्रता से पढ़ें, न कि पढ़ने की गति पर विशेष ध्यान दें। गति तीव्र करने से कभी-कभी एकाग्रचित्तता भंग हो जाती है।
2. परिच्छेद को पढ़ते समय किसी भी प्रकार का दबाव महसूस न करें तथा मस्तिष्क को तनाव मुक्त रखें।
3. परिच्छेद की संरचना का उपयोग करते हुए समझें कि लेखक द्वारा परिच्छेद का विचार कैसे और क्यों विकसित किया गया है।
4. परिच्छेद को पढ़ते हुए शुरू करने के साथ इस बात का अनुमान लगाएँ कि इस परिच्छेद की विषय वस्तु क्या है तथा लेखक परिच्छेद के माध्यम से क्या कहना चाहता है।
5. परिच्छेद पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनते समय परिच्छेद को बार-बार पढ़ने के बजाय लेखक की मुख्य बातों को ध्यान में रखते हुये चिह्नित करें।
6. परिच्छेद की सूचनाओं को व्यवस्थित करें तथा स्पष्ट समझ के लिये इन सूचनाओं को प्रथम परिच्छेद से जोड़ें।
7. संकेतक का प्रयोग करते हुए जैसे कि पेंसिल इत्यादि से परिच्छेद के महत्त्वपूर्ण शब्द तथा सूचनाओं को चिह्नित करें।
8. संकेतक का प्रयोग अनावश्यक रूप से, जैसे कि सभी पंक्तियों को रेखांकित करना या सामान्य शब्दों को रेखांकित करना लाभदायक सिद्ध नहीं होता है। इससे सिर्फ समय नष्ट होगा।
9. प्रश्नों में दिये गए विकल्पों में से गलत विकल्पों को पहले हटा दें, उनमें वे विकल्प पहले हटाएँ, जिन विकल्पों में परिच्छेद से इतर तथ्य तथा सूचनाएँ दी गई हैं। इससे सही विकल्प चुनने में आसानी होगी।
10. लेखक की परिच्छेद के बारे में क्या राय एवं विचार है, को व्यक्त करें।
11. कभी-कभी भाषानुवाद भावानुवाद को बदल देता है। इसके लिये अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद से संबंधित शब्द को जरूर देखें।

राजनीतिक

परिच्छेद-1

सामान्य अर्थों में लोकतंत्र को सरकार के एक प्रकार के रूप में समझा जाता है, जिसका संबंध लोकप्रिय संप्रभुता से है। इसे अनिवार्य रूप से लोगों द्वारा शासन माना जाता है, जो राजतंत्र अथवा कुलीनतंत्र का विरोधाभासी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समाज के विभिन्न तबकों को अपनी बात रखने के लिये दी गई आजादी है। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था अपनी अधिकतम क्षमता से तभी कार्य कर सकती है, जब आम जनता की व्यापक भागीदारी हो, जो तब तक संभव नहीं है जब तक कि लोगों को विभिन्न मुद्दों से अवगत नहीं कराया जाए। विश्वसनीय सूचना संसाधन किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिये महत्त्वपूर्ण होते हैं और यहीं से मीडिया की भूमिका शुरू होती है।

1. मीडिया लोकतंत्र की जड़ों को किस प्रकार मजबूत कर सकता है?
   (a) सरकार के रोजमर्रा के कार्यों में प्रत्यक्ष भागीदारी करके
   (b) लोगों को उनके लोकतांत्रिक कर्तव्यों के बारे में जागरूक बनाकर
   (c) लोगों को विभिन्न लोकतांत्रिक मुद्दों के बारे में अवगत कराकर
   (d) लोगों को यह बताकर कि सरकार कैसे कार्य करती है और उनके क्या अधिकार हैं?

2. आम जनता की व्यापक भागीदारी किस व्यवस्था का अभिन्न अंग है?
   (a) राजतंत्र
   (b) कुलीनतंत्र
   (c) लोकतंत्र
   (d) इनमें से कोई नहीं

परिच्छेद-2

लोकतंत्र को आमतौर पर लोगों की, लोगों द्वारा एवं लोगों के लिये सरकार के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना को बरकरार रखने पर लक्षित है। भारत एक लोकतांत्रिक देश अवश्य है, लेकिन दुर्भाग्य से भारतीय अभी तक लोकतांत्रिक नहीं हैं। भारत के लोगों को प्रत्येक पाँच वर्ष पर अपने प्रतिनिधि को चुनने का मौका प्रदान किया जाता है, जो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति और उनकी परवाह करे। ज्यों ही चुनाव खत्म होते हैं, उनकी आशाओं का गला घोंट दिया जाता है। इस असफलता के पीछे का कारण लोकतंत्र की पूर्वापेक्षा की कमी है। एक सफल लोकतंत्र के लिये सबसे पहली शर्त वहाँ के लोगों की शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता है। ईमानदारी व नेताओं की वचन-बद्धता, पूर्णरूपेण स्वतंत्र न्यायपालिका, उचित जाँच-पड़ताल जैसे कुछ दूसरे तथ्यों की चर्चा की जा सकती है। वास्तविकता यह है कि जब संपूर्ण लोकतंत्र की बात आती है तो अकेला राजनीतिक लोकतंत्र कुछ नहीं कर सकता। लोकतंत्र इस पर खरा नहीं उतरता। सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र भी इसके साथ चलते हैं। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि उपलब्ध संसाधनों का अस्सी प्रतिशत हमारी बीस प्रतिशत आबादी द्वारा उपभोग किया जाता है। क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता एवं जातिवादिता जैसे राक्षसों ने माहौल बिगाड़ कर रख दिया है। समाज के वंचित वर्ग शुरुआत में शोषित किये जाते हैं और बाद में उन्हें नकार दिया जाता है। महिलाओं के सशक्तीकरण की बात भाषणों तक सीमित है। इन परिस्थितियों में लोकतंत्र की प्राप्ति संभव नहीं है। अगर आगे जरूरी कदम उठाए गए तो भविष्य में आशा जगती है, नहीं तो स्थिति और भी बुरी हो जाएगी।

3. भारतीय अभी तक लोकतांत्रिक क्यों नहीं हैं?
   (a) वे सही प्रतिनिधि नहीं चुनते हैं।
   (b) वे अपने अधिकार का गलत प्रयोग करते हैं।
   (c) वे पर्याप्त शिक्षित नहीं हैं कि राजनीतिक विवादों को समझ सकें।
   (d) वे उचित प्रक्रिया से अवगत नहीं हैं।

4. वाक्यांश के अनुसार, 'उनकी आशाओं का गला घोंट दिया जाता है' से क्या समझा जा सकता है?
   (a) उनमें बिल्कुल भी आशाएँ नहीं हैं।
   (b) उनकी आशाएँ बुरी तरह नकारी जाती हैं।
   (c) उनकी आशाएँ पूरी होती हैं, लेकिन देरी से।
   (d) अब उनमें आशाएँ नहीं हैं।

5. वर्तमान में आशा पूरी क्यों नहीं होती है?
   (a) परिस्थितियाँ नियंत्रण से बाहर हैं।
   (b) लोग कोई भी कदम उठाने को तैयार नहीं हैं।
   (c) वर्तमान में यह स्थिति बन रही है, क्योंकि पूर्व में जरूरी कदम नहीं उठाए गए थे।
   (d) महिलाओं का सशक्तीकरण सहज नहीं है।

सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक

परिच्छेद–1

सभी आधुनिक समाजों में कानून का अस्तित्व है और प्राय: इसे वर्तमान सभ्य समाजों की आधारशिला माना जाता है, लेकिन ऐसा क्या है, जो कानून को अन्य सामाजिक नियमों से अलग करता है और किस अर्थ में कानून को अंतर्राष्ट्रीय या वैश्विक स्तर पर संचालित किया जाता है? घरेलू कानून के मामले में इसके विशिष्ट लक्षणों की पहचान करना आसान होता है। पहला, कानून सरकार द्वारा बनाया जाता है और इसलिये पूरे समाज पर लागू होता है। राज्य की इच्छा से निर्मित होने के कारण कानून को न केवल अन्य मानदंडों एवं सामाजिक नियमों पर वरीयता प्राप्त होती है बल्कि यह घरेलू कानूनों को एक सुनिश्चित राजनैतिक समाज के दायरे में रहते हुए सार्वभौमिक क्षेत्राधिकार प्रदान करता है। दूसरा, कानून सभी के लिये अनिवार्य होता है; नागरिकों को इस बात की अनुमति नहीं होती है कि वे किस कानून को मानें और किसकी उपेक्षा करें; क्योंकि कानून को नियंत्रण एवं दंड की एक व्यवस्था द्वारा समर्थन प्राप्त होता है। इसीलिये कानून को विधिक प्रणाली, मानदंडों एवं संस्थाओं के एक संकलन की आवश्यकता होती है, जिसके माध्यम से वैधानिक नियमों का निर्माण, व्याख्या: एवं कार्यान्वयन किया जाता है। तीसरा, कानून का स्वरूप सार्वजनिक होता है और इस रूप में इसके अंतर्गत कूटबद्ध, प्रकाशित एवं मान्य नियम अंतर्निहित होते हैं। इन्हें एक औपचारिक और सामान्यत: सार्वजनिक, वैधानिक प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त कानून तोड़ने के लिये दिये जाने वाले दंड का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, जबकि मनमानी गिरफ्तारी अथवा कारावास यादृच्छिक या तानाशाही प्रकृति का होता है। चौथा, कानून जिन पर लागू होता है, उनके लिये बाध्यकारी माना जाता है, बेशक फिर कुछ कानूनों को गैर न्यायपूर्ण अथवा अनुचित ही क्यों न माना जाए। इसलिये, कानून को केवल प्रवर्तनीय आदेशों के एक संकलन से अधिक माना जाता है, इसमें नैतिक दावे भी अंतर्निहित होते हैं, जिनका तात्पर्य है कि विधिक नियमों का पालन किया जाना चाहिये।

1. परिच्छेद के संदर्भ में कानून को सामाजिक नियमों से अलग किस तरह माना जा सकता है?
   - (a) किसी एक देश में बनाए गए कानून उसके प्रत्येक नागरिक पर लागू होते हैं, जबकि सामाजिक नियम एक समाज से दूसरे समाज में बदलते रहते हैं।
   - (b) कानून समाज पर लागू होते हैं, जबकि सामाजिक नियम लागू नहीं होते हैं।
   - (c) कानून राजनीतिक समाज के लिये स्वीकार्य होते हैं, जबकि सामाजिक नियम नहीं।
   - (d) कानून उचित वैधानिक व्यवस्था के अनुरूप कार्य करते हैं, जबकि सामाजिक नियमों को किसी भी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती है।

2. यदि राज्य द्वारा एक नया कानून प्रस्तावित है तो उस कानून को वैधता प्राप्त करने के लिये निम्नलिखित में से कौन-सी शर्त/शर्तें अनिवार्य है/हैं?
   - (a) जनता की सहमति
   - (b) वैधानिक समर्थन
   - (c) सार्वभौमिक क्षेत्राधिकार
   - (d) न्यायपूर्ण प्रकृति

3. किसी कानून में अंतर्निहित 'सार्वजनिक' गुणवत्ता से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
   - (a) कानून सामान्यत: जनता द्वारा बनाए एवं प्रयोग किये जाते हैं?
   - (b) कानून लिखित होता है और जनता सामान्यत: इसके क्रियान्वयन पक्ष से ही वाक़िफ होती है।
   - (c) जनता को सामान्यत: इसके बारे में पता होता है कि कानून का उल्लंघन करने के पश्चात् या तो वे दंडित होंगे या नहीं।
   - (d) लोगों को सामान्यत: यह पता होता है कि कानून के तहत मनमानी गिरफ्तारी संभव नहीं है।

4. चूँकि परिच्छेद में स्पष्ट रूप से 'अंतर्राष्ट्रीय कानून' की परिभाषा का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन परिच्छेद में दी गई जानकारी के आधार पर इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
   - (a) वे सभी देशों द्वारा स्वीकृत होने चाहिये।
   - (b) उन्हें पर्याप्त कानूनी समर्थन प्राप्त होना चाहिये।
   - (c) वे भिन्न-भिन्न देशों के अलग-अलग सामाजिक नियमों के अनुरूप होने चाहिये।
   - (d) उपर्युक्त सभी

परिच्छेद–2

''भारत में बौद्धिक संपदा अधिकारों की व्यवस्था में अंतर्निहित औचित्य अथवा इसका दार्शनिक आधार तीन मूल उद्देश्यों में सम्मिलित है। पहला, यह एक ओर उत्पादकों के

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण

परिच्छेद–1

पारिस्थितिक तंत्र हमें बहुमूल्य नवीकरणीय संसाधन एवं सेवाएँ जैसे कि भोजन, रेशा, जल संग्रहण एवं बाढ़ नियंत्रण, निर्माण कार्य हेतु लकड़ी, वायु एवं जल से प्रदूषणकारी तत्त्वों को हटाने, कीट एवं बीमारी नियंत्रण तथा सुधार और जलवायवीय दशाएँ प्रदान करता है। कुछ हद तक इन वस्तुओं एवं सेवाओं को भी पर्यावरण प्रदूषण से खतरा होता है, इन्हें नागरिक प्रयासों, मानव निर्मित रसायनों और गैर-नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिये। पारिस्थितिक तंत्र पुनर्निर्माण, वैज्ञानिक खोज अथवा जंगलों या तट के किनारे चलने-फिरने की दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण तो नहीं है, लेकिन फिर भी बहुमूल्य प्रकृति के अवसर उपलब्ध अवश्य कराता है।

वायु एवं जल प्रदूषण (उदाहरण के लिये औद्योगिक संयंत्र एवं मछली विहीन नदियों के आसपास के उजड़े हुए क्षेत्र) से पर्यावरण को होने वाले अत्यधिक नुकसान को कम करने में महत्त्वपूर्ण प्रगति हासिल हुई है। खतरनाक स्तर की संभावित आपदाओं जैसे वन क्षेत्र का कम होना, मुहानों पर विषाक्त सूक्ष्मजीवों से व्यापक रूप से फैलने वाली महामारियों, वन्य जीवन के पुनर्उत्पादन में विफलता, स्थायी जैव प्रदूषकों का पुनर्वितरण, महत्त्वपूर्ण आवासों का विनाश, विषाणु जनित संक्रामक तथा वैश्विक जलवायु परिवर्तन आदि को समझने एवं इन्हें नियंत्रित करने के संबंध में अभी बहुत कुछ समझना बाकी है।

1. निम्नलिखित में से किसे परिच्छेद की विषयवस्तु माना जा सकता है?
   - (a) पर्यावरणीय प्रदूषण पारिस्थितिक तंत्र की प्रभावोत्पादकता पर गंभीर सवाल खड़ा करता है।
   - (b) मानवीय गतिविधियों ने पर्यावरण को किस प्रकार क्षति पहुँचाई है।
   - (c) पर्यावरण का निम्नीकरण पारिस्थितिक तंत्र के अंतर्निहित गुणों को क्षीण कर देता है और इससे गंभीर पर्यावरणीय संकटों का खतरा मँडरा रहा है।
   - (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
2. पारिस्थितिकी तल की विशिष्ट प्रकृति क्या है/हैं?
   - (a) पारिस्थितिकी तंत्र स्वतः ही जलवायवीय निम्नीकरण से लड़ सकता है
   - (b) मानवीय गतिविधियाँ हमारे पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान भी पहुँचा सकती है और बचा भी सकती है।
   - (c) बहुमूल्य प्रकृति की उपलब्धता।
   - (d) उपर्युक्त सभी
3. पारिस्थितिकी तंत्र की संभावित आपदाओं में क्या शामिल नहीं है?
   - (a) महत्त्वपूर्ण आवासों का विनाश
   - (b) वैश्विक जलवायु परिवर्तन
   - (c) परमाणु प्रसार का खतरा
   - (d) वन क्षेत्र का कम होना।

परिच्छेद–2

मैं हमेशा दुनियाभर में आने वाली आपदाओं के बारे में सोचता हूँ, जिनकी वजह से लोग मरते हैं, घायल होते हैं और इनके कारण हुए विनाश की वजह से बड़े पैमाने पर लोग विस्थापित होते हैं, साथ ही इसके दीर्घकालिक प्रभाव भी सामने आते हैं। मेरे दिमाग में हमेशा इस बात को लेकर आश्चर्य होता है कि यह सब क्यों होता है? क्या इसके प्रभावों को कम करने का कोई तरीका है या फिर यह पूरी तरह से एक प्राकृतिक घटना है और इस कारण इसे रोक पाना मनुष्य की क्षमता से बाहर की बात है, इसलिये हम सब कुछ भगवान भरोसे छोड़कर भाग्यवादी बन जाएँ? वर्षों से भिन्न-भिन्न लोगों ने आपदाओं को भिन्न-भिन्न तरीकों से परिभाषित किया एवं समझा है और इस बात पर व्यापक सहमति भी व्यक्त की गई है कि खतरे (Hazardous) प्राकृतिक हैं, लेकिन आपदाएँ (Disasters) गैर-प्राकृतिक होती हैं। अब मैं आपदा के विभिन्न पक्षों को उजागर करना चाहूँगा और इस बात को स्पष्ट करूँगा कि किस प्रकार एक प्राकृतिक खतरा, आपदा में रूपांतरित हो जाता है? आपदा के प्रभावों का अनुमान कैसे लगाया जाता है? इसके विकासीय निहितार्थ क्या हैं और हमें आपदा को कैसे समझना चाहिये तथा आपदा एवं उसके प्रभावों से अलग-अलग तरीके से किस प्रकार निपटा जाना चाहिये।

4. "प्राकृतिक खतरे एवं आपदा दो अलग-अलग घटनाएँ हैं।" इसको किस तरह स्पष्ट किया जा सकता है?
   - (a) पहले प्राकृतिक खतरा आता है, उसके बाद आपदा आती है।
   - (b) प्राकृतिक खतरे ईश्वर की देन हैं, जबकि आपदाएँ मानव जनित होती हैं।
   - (c) प्राकृतिक खतरे प्राकृतिक घटना हैं, जबकि मानवीय गतिविधियाँ इन्हें आपदाओं में बदल देती हैं।
   - (d) (a), (b) और (c) सभी सही हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

परिच्छेद–1

भारत में कई फसलों (ट्रांसजेनिक) में जैव प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है। इस दिशा में किये गए प्रमुख प्रयास कपास की फसल को कीट-रोधी बनाने पर केंद्रित रहे हैं। अधिकांश पाठक कपास की खेती करने वाले किसानों द्वारा हाल ही में की गई आत्महत्याओं से अवश्य ही अवगत होंगे। हम आशा करते हैं कि हमें कीट-रोधी ट्रांसजेनिक कपास के बीज बनाने में सफलता मिल जाएगी। जब तक हमें इस कार्य में व्यावसायिक स्तर पर सफलता नहीं मिल जाती, हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हो सकते कि हम बड़े स्तर पर उपयोग के लिये इसकी पर्याप्त आपूर्ति कर सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस तरह के शोध कार्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिये, लेकिन हमें इसके बाकी के पहलू भी देखने चाहिये। भारत में फसल जैव प्रौद्योगिकी की दिशा में किये जा रहे शोध कार्यों के लिये आवश्यक है कि ये हमारी कुछ महत्त्वपूर्ण फसलों, विशेषकर वे जो खाद्य सुरक्षा से संबंधित हैं, पर केंद्रित हो।

1. परिच्छेद के संदर्भ में 'ट्रांसजेनिक फसलों' के संबंध में लेखक का क्या मानना है?
   (a) वह बड़े स्तर पर ट्रांसजेनिक फसलों के उपयोग का विरोध करता है।
   (b) उसे लगता है कि परंपरागत कृषि तकनीकें जैव प्रौद्योगिकी की अपेक्षा अधिक कार्यकुशल हैं।
   (c) उसे लगता है कि भारत के खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम पर ट्रांसजेनिक फसलों का व्यापक प्रभाव हो सकता है।
   (d) वह ट्रांसजेनिक फसलों की व्यावहारिकता को लेकर पूर्णतः आश्वस्त नहीं है।
2. भारत में किसानों की आत्महत्या का प्रमुख कारण है–
   (a) ट्रांसजैनिक फसलों को बढ़ावा
   (b) कपास की पैदावार में कमी
   (c) जैव प्रोद्योगिकी को बढ़ावा
   (d) इनमें से कोई नहीं

परिच्छेद–2

टेलीपैथी कैसे काम करती है? एक सिद्धांत के अनुसार जो टेलीपैथी को समझाने के लिये सुझाया गया है, हमारे मस्तिष्क केवल चेतन स्तर पर ही अलग-अलग एवं परस्पर पृथक् होते हैं, लेकिन अचेतन के गहरे स्तर पर हम निरंतर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और इसी स्तर पर टेलीपैथी कार्य करती है। एक आदर्श एवं कुछ-कुछ नाटकीय उदाहरण दिया जा सकता है: झील के किनारे बैठी एक महिला, एक आदमी के स्वरूप को झील की ओर दौड़ता हुआ देखती है, जो उस झील में कूद जाता है। कुछ दिनों बाद एक आदमी उसी झील में कूदकर आत्महत्या कर लेता है। संभवतः इस आभास की व्याख्या: यह है कि जब वह आदमी आत्महत्या का विचार कर रहा था तब उसका विचार उस महिला के मस्तिष्क के जरिये टेलीपैथी प्रक्रिया से दृश्य रूप में प्रकल्पित हो गया था।

3. परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही है?
   (a) टेलीपैथी एक आनुभविक विहीन परिघटना है।
   (b) कभी-कभी टेलीपैथी के प्रकल्पन और ग्रहणकर्ता द्वारा उस विचार के प्रकटीकरण के मध्य विलंब होता है।
   (c) अवचेतन के गहरे स्तर पर हम निरंतर एक-दूसरे को प्रभावित नहीं कर सकते।
   (d) उपर्युक्त तीनों सही हैं।
4. परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में कौन-सा कथन सत्य है?
   (a) हमारा मस्तिष्क चेतनता के सभी स्तरों पर अलग-अलग होता है।
   (b) चेतनता के गहरे स्तर पर हम निरंतर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।
   (c) सिर्फ चेतनता के गहरे स्तर पर टेलीपैथी कार्य करती है।
   (d) इनमें से कोई नहीं
5. परिच्छेद के अनुसार टेलीपैथी आधारित प्रकटपन के संदर्भ में कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (a) भूतकाल, वर्तमान पर प्रकल्पित किया जा सकता है।
   (b) वर्तमान-वर्तमान पर प्रकल्पित किया जा सकता है।
   (c) भविष्य, वर्तमान पर प्रकल्पित किया जा सकता है।
   (d) विकल्प (a) और (b) दोनों।

दर्शन

परिच्छेद-1

दुविधा क्या है? प्रथम दृष्टया यह स्पष्ट नहीं होता है कि 'नैतिक दुविधा' शब्दावली एक ही तरह की कुछ ऐसी परिस्थितियों की पहचान करती है, जिनकी विशेषताएँ एक समान होती हैं। अब तक हम एक नकारात्मक कसौटी अपनाते आए हैं। नैतिक दुविधा महज़ एक कठिन निर्णय से भिन्न है। दुविधा की स्थिति में कठिनाई परिस्थिति की वास्तविक प्रकृति से उत्पन्न होती है और ज्ञान अथवा नैतिक ज्ञान की कमी मात्र के चलते हमें इसका सामना करना पड़ता है।

यह सत्य है कि आम बोलचाल में हमारा रुझान दुविधा शब्दावली को किसी भी ऐसे निर्णय के लिये प्रयोग करने के प्रति होता है, जहाँ हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं होते हैं कि दो विकल्पों में से किसका चुनाव करना है; दूसरे शब्दों में यह 'कठिन निर्णय' का समानार्थी प्रतीत होती है, जबकि जैसा कि हम देखते हैं कि किसी एक व्यक्ति के लिये जो जटिल है, वही किसी अन्य व्यक्ति, जिसका नैतिक बोध अधिक मजबूत है, के लिये अधिक स्पष्ट एवं आसान हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति किसी कठिन निर्णय को 'दुविधा' मानने पर बल देता है तो ऐसे लोगों को दुविधा की विविधता के लिये एक ऐसे शब्द की आवश्यकता होती है, जो उस व्यक्ति के अपने दिमाग की उपज न हो, बल्कि समाज में किसी वास्तविक स्थिति के लिये व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने वाला शब्द हो।

1. नैतिक दुविधा का सामना किसकी कमी के कारण करना पड़ता है?
   (a) ज्ञान की कमी के कारण।
   (b) नैतिक ज्ञान की कमी के कारण।
   (c) नकारात्मक कसौटी के कारण।
   (d) ज्ञान तथा नैतिक ज्ञान दोनों की कमी के कारण।
2. निम्नलिखित में से कौन एक नैतिक दुविधा और कठिन निर्णय के मध्य भेद कर सकता है?
   (a) नैतिक दुविधा परिस्थितिजन्य स्थिति का परिणाम होती है, जबकि दो विकल्पों में से चयन की अनिश्चितता के परिणामस्वरूप कठिन निर्णय उत्पन्न होता है।
   (b) प्रत्येक कठिन निर्णय एक नैतिक दुविधा होती है, जबकि प्रत्येक नैतिक दुविधा, कठिन निर्णय नहीं होता है।
   (c) नैतिक दुविधा की स्थिति में किसी व्यक्ति का झुकाव अन्य की अपेक्षा एक विशेष निर्णय के प्रति होता है, जबकि कठिन निर्णय के संबंध में ऐसा नहीं होता है।
   (d) नैतिक दुविधा की स्थिति में हम परिणामों के प्रति आश्वस्त होते हैं, जबकि कठिन निर्णय की स्थिति में ऐसा नहीं होता है।
3. निम्नलिखित में से कौन-से कथन दुविधा के संबंध में सही हैं?
   (a) दुविधा जानकारी के अभाव में उत्पन्न होती है।
   (b) जो किसी व्यक्ति के लिये दुविधा है, वही किसी अन्य व्यक्ति के लिये बेतुका एवं आश्चर्यजनक रूप से बहुत ही आसान हो सकता है।
   (c) यदि किसी समस्या के दो समाधान हैं और उनमें से एक अधिक लाभप्रद है तो वह दुविधा है।
   (d) विकल्प (b) और (c) दोनों।
4. इस परिच्छेद का संबंध निम्नलिखित में से किसके साथ होने की संभावना सर्वाधिक है?
   (a) चिकित्सा विज्ञान का जर्नल
   (b) दर्शनशास्त्र का जर्नल
   (c) मनोविज्ञान का जर्नल
   (d) निर्णयन संबंधी पुस्तक

परिच्छेद-2

1990 के दशक के बाद से कई लोकप्रिय पुस्तकें एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन ऐसे रहे हैं, जिन्होंने 'बौद्धिकता' के अर्थ को लेकर हमारी सामान्य समझ में बौद्धिक जागरूकता एवं योग्यता को शामिल करने की मांग की है। इस विचार को डेनियल गोलेमैन की 1996 में आई सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक 'इमोशनल इंटेलीजेंस' द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। गोलेमैन का तर्क था कि लोगों के जीवन अवसरों को निर्धारित करने में भावनात्मक बौद्धिकता कम से कम बुद्धिलब्धि जितनी महत्त्वपूर्ण तो हो ही सकती है। भावनात्मक बौद्धिकता का संबंध इन बातों से है कि लोग अपनी भावनाओं का प्रयोग किस तरह करते हैं, यह भावनाओं को समझने की क्षमता, और साथ ही जब भावनाएँ उत्पन्न होती हैं तो उनका मूल्यांकन करने और स्वयं में और दूसरों में उनको व्यवस्थित करने पर भी विचार करती है। बुद्धिलब्धि विचारकों के विपरीत, हालाँकि भावनात्मक बौद्धिकता के गुण वंशानुगत नहीं होते। अतः बच्चों

विविध

परिच्छेद-1

''अर्थशास्त्री, नीतिशास्त्री और व्यापारी हमें विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, लेकिन उनका प्रमाण कमज़ोर है। हम ऐसे आँकड़ों को प्राप्त करने की आशा करते हैं, जो उनके सिद्धांतों को समर्थन दें और संभवत: व्यापार-व्यवहार के उच्च मानकों को प्रोत्साहित करें। हमारे लिये आश्चर्य की बात यह है कि हमारे पसंदीदा सिद्धांत टिके रहने में असफल हैं। हम देखते हैं कि छल-कपट लाभ पहुँचा सकता है। सत्य बोलने एवं अपना वचन निभाने का कोई ठोस आर्थिक कारण नहीं है। व्यवहार-जगत में छल-कपट के लिये दंड न तो तुरंत मिलता है, न ही सुनिश्चित है।

सही मायने में ईमानदारी, प्राथमिक रूप से एक नैतिक चयन है। व्यापारी लोग अपने आप से कहते हैं कि लंबे समय में वे सही करके ही अच्छा करेंगे, लेकिन इस धारणा के लिये तथ्यात्मक एवं तार्किक आधार बहुत कम है। गहरे मूल्यों के बिना, गलत के स्थान पर सही के पक्ष में मूलभूत प्राथमिकता के बिना अपने प्रति भ्रामक धारणाओं पर टिका विश्वास प्रलोभनों की स्थिति में टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। हममें से अधिकांश लोग सद्गुणों को इसलिये चुनते हैं, क्योंकि हम खुद में विश्वास रखना चाहते हैं और दूसरों का सम्मान और विश्वास हासिल करना चाहते हैं।

और इसके लिये हमें प्रसन्न होना चाहिये। हम एक ऐसी व्यवस्था पर गर्व कर सकते हैं, जिसमें लोग इसलिये ईमानदार हैं, क्योंकि वे ऐसा बनना चाहते हैं, न कि इसलिये कि उन्हें ऐसा बनना पड़ता है। भौतिक जगत में भी नैतिकता पर आधारित विश्वास अत्यधिक लाभ प्रदान करता है। यह हमें कई महान और उत्साहजनक उद्यमों में शामिल होने की अनुमति देता है, जिन्हें केवल आर्थिक उत्प्रेरकों पर निर्भर रहकर हम कभी भी आरंभ नहीं कर सकते थे।

1. परिच्छेद के अनुसार अर्थशास्त्री और नीतिशास्त्री हमें क्या विश्वास दिलाना चाहते हैं?
   - (a) व्यापारियों को हर समय ईमानदार होना चाहिये।
   - (b) व्यापारी हर समय ईमानदार नहीं हो सकते हैं।
   - (c) व्यापारी कभी-कभी बेईमान हो जाते हैं।
   - (d) व्यापारी केवल कभी-कभी ईमानदार होते हैं।
2. परिच्छेद के लेखक के अनुसार, निम्नलिखित में से व्यापार में ईमानदार होने का कारण क्या है?
   - (a) यह कोई तात्कालिक लाभ नहीं देता है।
   - (b) यह दीर्घकालिक लाभ देता है।
   - (c) यह दूसरों के मन में आपके प्रति सम्मान लाता है।
   - (d) यह दूसरों को आपका सम्मान नहीं करने देता है।
3. लेखक क्यों कहता है कि कोई भी वर्तमान स्थिति पर गर्व कर सकता है?
   - (a) लोग आत्म-सम्मानी होते हैं।
   - (b) लोग सम्मान-खोजी होते हैं।
   - (c) लोग नि:स्वार्थी होते हैं।
   - (d) लोग बिना किसी मजबूरी के ईमानदार होते हैं।
4. अर्थशास्त्रियों के अनुसार व्यापारी लोग ईमानदार क्यों बने रहते हैं?
   - (a) बेईमान व्यापारी अधिक धन अर्जित कर सकते हैं।
   - (b) बेईमान व्यापारी लंबे समय में जाकर धन अर्जित कर पाते हैं।
   - (c) बेईमान व्यापारी लंबे समय तक व्यापार में टिके नहीं रह सकते हैं।
   - (d) बेईमान व्यापारियों पर हमेशा मुकदमा चलाया जाता है।

परिच्छेद-2

हाल के वर्षों में भूमंडलीकरण ने काफी हद तक लोगों का ध्यान आकर्षित किया है, क्योंकि सामाजिक वैज्ञानिकों, राजनीतिक पंडितों और सांस्कृतिक आलोचकों ने इस बात की व्याख्या: करने की कोशिश की है कि किस तरह इसने हमारी दुनिया को बदल कर रख दिया है परंतु क्या यह वास्तव में नया है? जहाँ तक खोजकर्ताओं के पास लंबी दूरियाँ तय करने के साधन थे, उन्होंने अपने समुदाय की जानकारी से बाहर की वस्तुओं को जानने, समझने और उनसे लाभ प्राप्त करने की कोशिश की।

खोजों और औपनिवेशीकरण का महान काल इस बात का साक्षी है, हालाँकि इसमें और भी कई प्रेरणाएँ अंतर्निहित हैं। दुनिया के बारे में जानने, स्थानीय विधियों के असफल होने की स्थिति में जीवन-निर्वाह के बेहतर साधन तलाशने, प्रसिद्धि एवं भाग्य की खोज करने, जिस चीज का अभाव या कमी है, उसका व्यापार करने तथा देश को प्रसिद्धि दिलाने जैसे विभिन्न प्रेरक कारकों ने मानव समाजों को एक ऐसी दुनिया के लिये प्रेरित किया, जो समय के साथ-साथ और संयोजित होती गई।

विगत वर्षों के प्रश्न

निर्देश (प्र.सं. 1 – 5): *निम्नलिखित लेखांश को पढ़िये और अंत में दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रश्नों के उत्तर लेखांश पर आधारित होने चाहिये।*

इस बात के प्रमाण बढ़ रहे हैं कि उल्कापिंड का पृथ्वी से टकराव पृथ्वी पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, विशेष रूप से जैविक विकास के क्षेत्र में। इस तरह के टकराव पृथ्वी पर जीवन के लिए एक प्राकृतिक खतरा जारी रखते हैं। यह जानकारी स्पष्ट है कि बीसवीं शताब्दी में दो बार, बड़ी उल्कापिंड पृथ्वी से टकराई है। यदि कोई टकराव काफी बड़ा है, तो यह पूरे पृथ्वी के पर्यावरण को अस्त व्यस्त कर सकता है और पारिस्थितिकीय आपदा का कारण बन सकता है। प्रमाणों के अनुसार भू-इतिहास के क्रेटेसियस काल के अंत में ऐसा टकराव 65 मिलियन वर्ष पहले हुआ था। पृथ्वी के इतिहास में यह अंतराल अनेक बड़े जंतुओं के विलुप्त होने से चिह्नित है, जब ग्रह पर पायी जाने वाली आधी प्रजातियाँ विलुप्त हो गई थी। हालाँकि भूगर्भीय रिकॉर्ड में एक दर्जन या अधिक बड़े विलुप्त होने के प्रमाण हैं, क्रेटेसियस महाविलुप्तीकरण हमेशा जीवाश्मविज्ञानिओं को आकर्षित करता है क्योंकि यह डायनासोर के युग के अंत को चिह्नित करता है। लाखों वर्षों से, उन विशाल प्राणियों का विकास हआ था। फिर, अचानक, वे गायब हो गए। क्रेटेसियस काल के अंत में पृथ्वी पर टकराने वाला एक ट्रिलियन टन और कम से कम 10 किलोमीटर व्यास के द्रव्यमान का एक उल्कापिंड था। वैज्ञानिकों ने सबसे पहले, ग्रह को ढकने वाले धूल बादल से जमा तलछट की विश्वव्यापी परत से 1980 में इर प्रभाव की पहचान की। यह तलछट परत दुर्लभ धातु इरिडियम और अन्य तत्त्वों से समृद्ध है, जो एक उल्कापिंड में अपेक्षाकृत प्रचुर मात्रा में होते हैं लेकिन पृथ्वी की परत में बहुत दुर्लभ हैं। यहाँ तक कि क्रेटर की खुदाई के बाद स्थलीय सामग्री में मिश्रित हो जाने के बाद भी उल्कापिंड के इस घटक को आसानी से पहचान जाता है। 1990 तक भूगर्भिकों ने मैक्सिको के यूकाटन क्षेत्र में इस उल्कापात के स्थान को खोजा था। क्रेटर अथवा विशाल गड्डा जो अब तलछट में गहराई से दफन हो गया है, मूल रूप से लगभग 200 किलोमीटर व्यास का था।

1. लेखक ने डायनासोर के लाखों वर्षों में विकसित होने और फिर अचानक गायब होने की जानकारी को क्यों शामिल किया है?

(a) यह समझाने के लिए कि क्यों जीवाश्मवैज्ञानिक क्रेटेसियस काल के अंत में हुये महाविलुप्तीकरण के विषय में जानने के लिये हमेशा उत्सुक होते हैं

(b) इस दावे का समर्थन करने के लिए कि क्रेटेसियस काल के अंत में हुआ बड़ा विलुप्तीकरण दर्जन या अधिक ऐसे विलुप्तीकरण में से सबसे अधिक सहेजा हुआ भूगर्भीय प्रमाण है

(c) यह समझाने के लिए कि क्यों और कैसे उस समय पृथ्वी की प्रजातियों में से आधी क्रेटेसियस काल के अंत में विलुप्त हो गई हैं।

(d) यह सबूत प्रदान करने के लिए कि पूरे ग्रह के पर्यावरण आपदा के लिये एक टकराव काफी बड़ा हो सकता है ***MPPCS (Pre), 2019***

2. मैक्सिको में उल्कापिंड टकराव के स्थान के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा अनुमान लगाया जा सकता है?

(a) भूगर्भिकों को उल्कापात के बारे में पता था यह जानने के पहले कि वह कहाँ हुआ था

(b) मैक्सिको के उल्कापात का स्थान भूगर्भिकों द्वारा 1980 से 1990 तक गुप्त रखा गया था

(c) यह एक प्रसिद्ध तथ्य था कि यूकाटन क्षेत्र में टकराव हुआ था

(d) यूकाटन क्षेत्र को भूगर्भिकों द्वारा उसके जलवायु की वजह से सबसे संभावित उल्कापात के स्थान के रूप में चुना गया था

MPPCS (Pre), 2019

3. निम्नलिखित में से किस तथ्य के आधार पर वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि एक बड़ा उल्कापिंड पृथ्वी से टकराया था?

(a) उन्होंने मैक्सिको के यूकाटन क्षेत्र में एक बड़ा क्रेटर खोजा

(b) उन्हें तलछट की एक परत मिली

(c) वे पुरातत्वविदों द्वारा यूकाटन क्षेत्र में की जाने वाली खुदाई से सतर्क हो गये थे

(d) पाए गए तलछट में प्रचुर मात्रा में इरिडियम उपलब्ध था ***MPPCS (Pre), 2019***

4. परिच्छेद में "उत्सुक" शब्द का तात्पर्य है

(a) हैरान (b) सांठ-गाँठ

(c) उलझन (d) मोहित

MPPCS (Pre), 2019

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596